भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र

(COMPARATIVE PHILOLOGY & GENERAL LINGUISTICS)

लेखक

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी), एम०ओ०एल०, डी०फिल्०

पी०ई०एस० (अ०प्रा०), विद्याभास्कर, साहित्यरत्न, व्याकरणाचार्य

निदेशक

विश्वभारती अनुसंधान परिषद्

ज्ञानपुर (भदोही)

प्रणेता—'अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन', 'संस्कृत-व्याकरण'

'संस्कृत निबन्ध-शतकम्' (तीनों उ०प्र० शासन द्वारा सम्मानित),

'प्रौढ रचनानुवाद-कौमुदी', 'राष्ट्र-गीताञ्जलिः' आदि।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

विषय-सूची

पृष्ठ

चित्र-परिचय XV

अध्याय १

सामान्य-परिचय १-२६

१.१. भाषा-विज्ञान क्या है? ३
१.२. भाषा-विज्ञान का नामकरण ५
१.३. भाषा-विज्ञान की परिभाषा ६
१.४. भाषा-विज्ञान का क्षेत्र ७
१.५. भाषा-विज्ञान के अंग ८
१.६. भाषा-विज्ञान की शाखाएँ ११
१.७. भाषा-विज्ञान विज्ञान है या कला? १३
१.८. भाषा-विज्ञान और भाषा-शास्त्र १४
१.९. भाषा-विज्ञान की उपयोगिता १५
१.१०. भाषा-विज्ञान और अन्य शास्त्र १७

अध्याय २

भाषा की परिभाषा और विविध रूप २७-५०

२.१. भाषा का अर्थ २९
२.२. भाषा की परिभाषा ३०
२.३. भाषा के अनेक रूप ३२
२.४. बोली, विभाषा और भाषा ३६
२.५. भाषा का आधार ३९
(क) मानसिक-३९ (ख) भौतिक-४०
२.६. भाषा का द्विविध आश्रय ४०
(१) वक्ता-४० (२) श्रोता-४१
२.७. भाषा के तीन पक्ष ४१
२.८. भाषा और बाक् ४२
२.९. साहित्यिक भाषा और जनभाषा का अन्तर ४५
२.१०. भाषा की विशेषताएँ ४६
२.११. भाषा का व्यवहार ४७

अध्याय ३

भाषा का स्वरूप, उद्गम और विकास ४१-१०३

३.१. भाषा का स्वरूप और प्रवृत्तियाँ ४३
३.२. भाषा की उत्पत्ति (विविध मतों की समीक्षा) ६४
३.३. भाषा की परिवर्तनशीलता ८४
३.४. भाषा में परिवर्तन की दिशाएँ ८६
३.५. भाषा में परिवर्तन के कारण ८८
(क) आभ्यन्तर-८९ (ख) बाह्य-९६
(ग) सादृश्य-१०२

अध्याय ४

ध्वनि-विज्ञान (Phonetics) १०४-१९८

४.१. ध्वनि-विज्ञान क्या है? १०३
४.२. ध्वनि-विज्ञान की उपयोगिता १०७
४.३. फोनोलॉजी और फोनेटिक्स में अन्तर ११०
४.४. हम कैसे बोलते हैं? ११२
४.५. हम कैसे सुनते हैं? ११३
४.६. ध्वनि की उत्पत्ति और श्रवण ११८
४.७. प्रायोगिक ध्वनिविज्ञान (Experimental Phonetics) ११९
४.८. ध्वनिविज्ञान की तीन शाखाएँ १२६
४.९. वाग्-यन्त्र (ध्वनि-यन्त्र) (Vocal Organs) १२७
४.१०. वाग्-यन्त्र का वर्गीकरण १४३
४.११. स्वर और व्यंजन १४३
४.१२. वैदिक-ध्वनियाँ १४७
४.१३. संस्कृत-ध्वनियाँ १४८
४.१४. हिन्दी-ध्वनियाँ (हिन्दी की ध्वनियों का वर्गीकरण) १४८
४.१५. स्वरों का वर्गीकरण १५०
मानस्वर-१५२, गौण मानस्वर-१५५
मानस्वरों का वर्णन-१५६, केन्द्रीय स्वर-१५९
मूलस्वर-१६०, संयुक्त स्वर-१६०
४.१६. व्यंजन १६२
(क) स्थान-१६२ (ख) प्रयत्न-१६६
४.१७. व्यंजनों का वर्गीकरण (आधुनिक भाषाशास्त्र के अनुसार) १६७

४.१८. प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण १६६
स्पर्श-१७०, स्पर्श-संघर्षी-१७५, संघर्षी-१७६,
अर्धस्वर-१७६, नासिक्य-१७६, पार्श्विक-१८२,
लुण्ठित-१८३, उत्क्षिप्त-१८४, अन्तःस्फोट-१८४
४.१६. संयुक्त व्यंजन १८६
४.२०. समकालिक प्रयत्न-ध्वनियाँ (Co-articulation) १८७
४.२१. अक्षर और आक्षरिक (Syllable & Syllabic) १८८
अनाक्षरिक स्वर-१६०, आक्षरिक व्यंजन-१६०
४.२२. ध्वनि-गुण (Sound Quality) १६१
मात्रा (Quantity)-१६१, आघात-१६३, बलाघात-१६४,
स्वर या सुर-१६६, संगम या संधि-१६८

अध्याय ५

ध्वनि-विचार **१६६-२५१**

(क) स्वनिम-विज्ञान, ध्वनिग्राम-विज्ञान (Phonemics) **२०१**
५.१. स्वनिम-विज्ञान और स्वनिम (Phoneme) २०१
(क) स्वनिम-विज्ञान के विभिन्न नाम-२०१
(ख) स्वनिम-विज्ञान क्या है?-२०१
(ग) स्वनिम का स्वरूप-२०२
५.२. स्वनिम (फोनीम) का संक्षिप्त इतिहास २०२
५.३. स्वनिम (फोनीम) की परिभाषा २०२
५.४. स्वनिम (फोनीम) की विशेषताएँ २०३
५.५. संस्वन (Allophone) की विशेषताएँ २०४
५.६. स्वनिम-विज्ञान की उपयोगिता २०५
५.७. ध्वनि (Sound) और स्वनिम (Phoneme) में अन्तर २०५
५.८. ध्वनिविज्ञान (Phonetics) और स्वनिम-विज्ञान (Phonemics) में अन्तर २०६
५.६. स्वनिम और संस्वन (Phoneme & Allophone) २०६
५.१०. स्वनिम और संस्वन का निर्धारण २०६
५.११. स्वनिम छाँटने की विधि २१०
५.१२. स्वनिम के दो भेद २१२
(क) खण्डच स्वनिम-२१२ (ख) अखण्डच स्वनिम-२१४
५.१३. स्वनिमीय गठन (Phonemic Structure) २१६
(क) संस्कृत और हिन्दी में स्वनिमीय गठन-२१६

५.१४. संस्कृत के स्वनिम (ध्वनिग्राम) २१८
५.१५. हिन्दी के स्वनिम (ध्वनिग्राम) २२०
५.१६. ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन (Phonetic Transcription) २२३
(क) स्थूल प्रतिलेखन (Broad Transcription) २२३
(ख) सूक्ष्म प्रतिलेखन (Narrow Transcription) २२४
(ग) अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपिचिह्न (I.P.A.) २२४
(घ) ध्वन्यात्मक नागरी लिपि २२७
(ख) ध्वनि-परिवर्तन (Phonetic changes) २२७
५.१७. ध्वनि-परिवर्तन के कारण २२७
(क) आभ्यन्तर कारण-२२७
(ख) बाह्य कारण-२२६
५.१८. ध्वनि-परिवर्तन २३१
(क) अकारण ध्वनि-परिवर्तन-२३१
(ख) सकारण ध्वनि-परिवर्तन-२३१
५.१९. ध्वनि-परिवर्तन की दिशाएँ २३२
१. समीकरण-२३३ २. विषमीकरण-२३३
३. आगम-२३३ ४. लोप-२३५
५. समाक्षर-लोप-२३५ ६. वर्ण-विपर्यय-२३५
७. महाप्राणीकरण-२३६ ८. अल्पप्राणीकरण-२३६
९. घोषीकरण-२३६ १०. अघोषीकरण-२३६
११. अनुनासिकीकरण-२३७ १२. ऊष्मीकरण-२३७
१३. संधि-कार्य-२३७ १४. मात्रा-भेद-२३७
५.२०. विशिष्ट ध्वनि-परिवर्तन २३७
१. अपिनिहिति (Epenthesis)-२३७
२. अभिश्रुति (Umlaut)-२३८
३. अपश्रुति (Ablaut, Vowel Gradation)-२३८
(ग) ध्वनि-नियम (Phonetic Laws) २४०
५.२१. ध्वनि-नियम २४०
१. ग्रिम नियम (Grimm's Law)-२४२
२. ग्रासमान नियम (Grassman's Law)-२४५
३. वर्नर नियम (Verner's Law)-२४६
४. तालव्य नियम (Palatal Law)-२४७
५. मूर्धन्य नियम (Cerebral Law)-२४९
६. अन्य ध्वनि-नियम-२५०

अध्याय ६

पद-विज्ञान (Morphology) २५३-२९१

६.१. पद और वाक्य २५५
६.२. पद और शब्द २५६
६.३. पद और सम्बन्धतत्त्व २५८
६.४. सम्बन्धतत्त्व (Morpheme) के प्रकार २५८
६.५. अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का संयोग २६५
६.६. संस्कृत में सम्बन्धतत्त्व २६६
६.७. हिन्दी में सम्बन्धतत्त्व २६७
६.८. पद-विभाग (Parts of Speech) २६८
६.९. व्याकरणिक कोटियाँ (Grammatical Categories) २६८
१. लिंग-२६९ २. वचन-२७१ ३. पुरुष-२७२
४. कारक-२७३ ५. क्रिया-२७३ ६. काल-२७५
६.१०. रूप-परिवर्तन की दिशाएँ २७६
६.११. रूप-परिवर्तन के कारण २७८
६.१२. रूपिम-विज्ञान या रूपग्राम-विज्ञान (Morphemics) २७९
रूपिम या रूपग्राम (Morpheme)-२८०
६.१३. संरूप (Allo-morph) २८४
६.१४. संहिता या संधि (Morpho-phonemics) २८६
६.१५. संस्कृत की संधियाँ २८७

अध्याय ७

वाक्य-विज्ञान (Syntax) २९३-३१७

७.१. वाक्य-विज्ञान का स्वरूप २९५
७.२. पद और वाक्य (अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद) २९६
७.३. वाक्य की परिभाषा २९७
७.४. वाक्य के अनिवार्य तत्त्व २९९
७.५. वाक्य में पद-विन्यास के आवश्यक गुण ३०१
७.६. वाक्य और पदक्रम ३०३
७.७. अन्त:केन्द्रिक और बहिष्केन्द्रिक रचना ३०४
७.८. वाक्यों के प्रकार ३०७
७.९. वाक्य का विभाजन ३११
७.१०. वाक्य के निकटतम अवयव ३१२
७.११. वाक्य में परिवर्तन की दिशाएँ ३१३

७.१२. वाक्य-परिवर्तन के कारण ३१५
७.१३. पदिम (Taxeme) ३१६

अध्याय ८

अर्थविज्ञान (Semantics) ३१९-३५२

८.१. अर्थविज्ञान क्या है? ३२१
८.२. अर्थविज्ञान का नामकरण ३२१
८.३. अर्थविज्ञान का इतिहास ३२२
८.४. अर्थ का महत्त्व ३२२
८.५. अर्थ का लक्षण ३२३
८.६. अर्थज्ञान कैसे होता है? ३२४
८.७. शब्द और अर्थ का सम्बन्ध ३२५
८.८. संकेतग्रह (अर्थज्ञान) के साधन ३२६
८.९. संकेतग्रह के बाधक तत्त्व ३२८
८.१०. शब्दशक्ति ३३०
८.११. एकार्थक और नानार्थक शब्द ३३१
८.१२. एकार्थक शब्दों का अर्थनिर्णय ३३२
८.१३. नानार्थक शब्दों का अर्थनिर्णय ३३४
८.१४. अर्थपरिवर्तन (अर्थविकास) की दिशाएँ ३३६
१. अर्थविस्तार-३३६ २. अर्थसंकोच ३३७
३. अर्थादेश-३३९ ४. अर्थोत्कर्ष-३४०
५. अर्थापकर्ष-३४०
८.१५. अर्थ-परिवर्तन के कारण ३४१
८.१६. अर्थिम, अर्थतत्त्व (Semanteme) ३५१
८.१७. अर्थिम और रूपिम में सम्बन्ध ३५१

अध्याय ९

भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण ३५३-३६७

(Morphological Classification of Languages)

९.१. विश्व की भाषाएँ ३५५
९.२. विश्वभाषाओं के वर्गीकरण का आधार ३५५
९.३. आकृतिमूलक वर्गीकरण ३५७
९.४. आकृतिमूलक वर्गीकरण का स्पष्टीकरण ३५७
९.५. अयोगात्मक भाषाएँ (Isolating Languages) ३५९

९.६. अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ (Agglutinative) ३६०
९.७. श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ (Inflectional) ३६३
९.८. प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ (Incorporative) ३६५
९.९. आकृति की दृष्टि से संस्कृत और हिन्दी ३६६
९.१०. आकृतिमूलक वर्गीकरण की उपयोगिता ३६७
९.११. आकृतिमूलक वर्गीकरण की समीक्षा ३६७

अध्याय १०

भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण ३६९-४११

(Genealogical Classification of Languages)

१०.१. विश्व-भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण ३७१
१०.२. पारिवारिक वर्गीकरण का स्वरूप ३७२
१०.३. पारिवारिक वर्गीकरण के आधार ३७३
१०.४. भारोपीय परिवार का महत्त्व ३७६
१०.५. भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम ३७७
१०.६. भारोपीय भाषा का उद्‌गम स्थान ३७८
१०.७. मूल भारोपीय ध्वनियाँ ३८१
१०.८. मूल भारोपीय भाषा की विशेषताएँ ३८३
१०.९. भारोपीय परिवार की शाखाएँ ३८४
(क) केन्तुम् और शतम् (सतम्) वर्ग-३८४
(ख) केन्तुम् और शतम् वर्ग-३८५
(भारोपीय परिवार-विभाजन)
१०.१०. भारोपीय परिवार की विशेषताएँ ३८५
१०.११. भारोपीय भाषाओं का परिचय ३८७
(१) भारत-ईरानी भाषाएँ-३८७
(२) बाल्टो-स्लाविक भाषाएँ-३८७
(३) आर्मीनी-३८९ (४) अल्बानी-३८९
(५) ग्रीक-३९० (६) केल्टिक-३९१
(७) जर्मानिक-३९१ (८) इटालिक-३९३
(९) हिटाइट-३९४ (१०) तोखारी-३९५
१०.१२. द्राविड़ परिवार ३९६
१०.१३. बुरुशस्की परिवार ३९७
१०.१४. काकेशी परिवार ३९७
१०.१५. यूराल-अल्ताई परिवार ३९७

१०.१६. चीनी परिवार ३९८
१०.१७. जापानी-कोरियाई परिवार ४००
१०.१८. अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार ४०१
१०.१९. बास्क परिवार ४०१
१०.२०. सामी-हामी परिवार ४०२
१०.२१. सूडानी परिवार ४०५
१०.२२. बान्तू परिवार ४०५
१०.२३. होतेन्तोत-बुशमैनी परिवार ४०६
१०.२४. मलय-पोलिनेशियाई परिवार ४०७
१०.२५. पापुई-परिवार ४०८
१०.२६. आस्ट्रेलियन परिवार ४०८
१०.२७. दक्षिण-पूर्व एशियाई परिवार ४०९
१०.२८. अमरीकी परिवार ४१०

अध्याय ११

आर्य या भारत-ईरानी शाखा **४१३-४२२**

(The Indo-Iranian or Aryan Group)

ईरानी शाखा

११.१. आर्य-परिवार ४१५
११.२. वैदिक-संस्कृत और अवेस्ता ४१६
११.३. संस्कृत और अवेस्ता की समानताएँ ४१६
११.४. संस्कृत और अवेस्ता की विषमताएँ ४१९
११.५. ईरानी भाषाएँ ४२०
(क) प्राचीन युग-४२० (ख) मध्ययुग-४२१
(ग) आधुनिक युग-४२१ (घ) दरद भाषाएँ-४२२

अध्याय १२

भारतीय आर्यभाषाएँ **४२३-४४६**

१२.१. काल-विभाजन ४२५
१२.२. **(क) प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ (प्रा० भा० आ०)** **४२५**
१२.३. वैदिक संस्कृत की ध्वनियाँ ४२६
१२.४. मूल भारोपीय और वैदिक ध्वनियों में अन्तर ४२७
१२.५. वैदिक भाषा की प्रमुख विशेषताएँ ४२७
१२.६. लौकिक संस्कृत या संस्कृत ४२८

१२.७. संस्कृत भाषा की विशेषताएँ ४२६
१२.८. वैदिक और लौकिक संस्कृत की समानताएँ विषमताएँ ४३०
१२.९. **(ख) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ (म० भा० आ०)** ४३१
(१) प्राचीन प्राकृत या पालि-४३१
(२) पालि की व्युत्पत्ति-४३३
(३) पालि की प्रमुख विशेषताएँ-४३४
१२.१०. शिलालेखी प्राकृत ४३४
१२.११. मध्यकालीन प्राकृत ४३५
(१) (क) शौरसेनी-४३५
(२) (ख) महाराष्ट्री (माहाराष्ट्री)-४३६
(३) (ग) मागधी-४३७ (४) (घ) अर्धमागधी-४३८
(५) (ङ) पैशाची-४३८
१२.१२. प्राकृत भाषाओं की सामान्य विशेषताएँ ४३९
१२.१३. अपभ्रंश (परकालीन प्राकृत) ४४०
१२.१४. **(ग) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ (आ० भा० आ०)** ४४२
१२.१५. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का परिचय ४४३
१. पश्चिमी हिन्दी-४४३ २. राजस्थानी-४४४
३. गुजराती-४४४ ४. मराठी-४४४
५. बिहारी-४४४ ६. बंगाली-४४५
७. उड़िया-४४५ ८. असमी-४४५
९. पूर्वी हिन्दी-४४५ १०. लहँदा-४४५
११. सिन्धी-४४६ १२. पंजाबी-४४६
१३. पहाड़ी-४४६

अध्याय १३
भाषाशास्त्र का इतिहास ४४७-४७८
(History of Linguistic Studies)
(क) भारत में भाषाशास्त्रीय चिन्तन ४४९
१३.१. वैदिक काल ४४९
१. वेद-४४९ २. ब्राह्मण-४५० ३. शिक्षा-४५२
४. प्रातिशाख्य-४५३ ५. निरुक्त-४५३
१३.२. पाणिनि एवं पाणिनीय वैयाकरण ४५५
१. पाणिनि-४५५ २. कात्यायन-४५६ ३. पतंजलि-४५७
१३.३. अष्टाध्यायी के व्याख्याकार ४५८

१३.४. महाभाष्य के व्याख्याकार ४५८
(१) भर्तृहरि-४५८, (२) कैयट-४६०
१३.५. कौमुदी-परम्परा के वैयाकरण ४६०
(१) भट्टोजि दीक्षित-४६० (२) नागेश भट्ट-४६०
(३) वरदराज-४६१
१३.६. पाणिनि-भिन्न व्याकरण-सम्प्रदाय ४६१
१३.७. प्राकृत-व्याकरण ४६२
१३.८. व्याकरणेतर शास्त्रों में भाषा-चिन्तन ४६३
१३.९. आधुनिक-युग के भाषाशास्त्री ४६४
(क) पाश्चात्त्य भाषाशास्त्री-४६४ (ख) भारतीय भाषाशास्त्री-४६५
(ग) संस्कृत भाषा पर कार्य करने वाले विद्वान्-४६५
(घ) हिन्दी भाषा पर कार्य करने वाले विद्वान्-४६६
१३.१०. **(ख) यूरोप में भाषाशास्त्रीय चिन्तन** ४६७
१३.११. अठारहवीं शती के भाषाशास्त्री ४६९
१३.१२. उन्नीसवीं शती के भाषाशास्त्री ४७०
१३.१३. बीसवीं शती के भाषाशास्त्री ४७७
१३.१४. भाषाशास्त्र की वर्तमान प्रवृत्तियाँ ४७८

अध्याय १४
लिपि का इतिहास (Palaeography) ४७९-४९७

१४.१. लिपि का प्रारम्भ ४८१
१४.२. लिपि-विकास के तीन चरण ४८२
१४.३. विश्व की प्राचीन लिपियों का संक्षिप्त परिचय ४८३
१४.४. भारत में लिपिज्ञान एवं लेखनकला ४८८
१४.५. खरोष्ठी लिपि ४९१
१४.६. ब्राह्मी लिपि ४९२
१४.७. ब्राह्मी से भारतीय लिपियों का विकास ४९४
(क) ब्राह्मी की उत्तरी शैली से विकसित लिपियाँ-४९४
(ख) ब्राह्मी की दक्षिणी शैली से विकसित लिपियाँ-४९५
१४.८. देवनागरी लिपि ४९६
१४.९. देवनागरी : आदर्श लिपि ४९६
सन्दर्भ-ग्रन्थ ४९८
निर्देशिका (Index) ५०१

चित्र-परिचय

चित्र-संख्या	विवरण	पृष्ठ
१.	कान के मुख्य भाग (कान की बनावट)	११३
२.	ध्वनियन्त्र (उच्चारण-स्थानों का स्पष्टीकरण)	१२८
३.	स्वरयन्त्र (स्वरतंत्री से ओष्ठ तक उच्चारण-अवयव)	१३१
४.	स्वरयन्त्र (स्वरतन्त्रियों की दो स्थितियाँ)	१३३
५.	स्वरतन्त्री (स्वरतन्त्रियों की चार स्थितियाँ)	१३४
६.	तालु के दो अंग (कठोरतालु, कोमलतालु)	१३७
७.	तालु के तीन अंग (कठोर, कोमल, वर्त्स)	१३७
८.	कोमल तालु नीचे झुका हुआ	१३७
९.	जिह्वा के अंग (नोक, फलक, अग्र, पश्च)	१४०
१०.	मानस्वरों की स्थिति (मानस्वरों का स्थान-निर्देश)	१५२
११.	अग्र मानस्वरों के उच्चारण में जिह्वा की स्थिति	१५४
१२.	हिन्दी के मानस्वरों का स्थान	१५५
१३.	क्, ख्, ग्, घ् के उच्चारण में कोमलतालु की स्थिति	१७२
१४.	त्, थ्, द्, ध् के उच्चारण में जीभ का अग्रभाग	१७३
१५.	प्, फ्, ब्, भ् के उच्चारण में ओष्ठों की स्थिति	१७४
१६.	च्, छ्, ज्, झ् के उच्चारण में जिह्वानोक की स्थिति	१७५
१७.	श् के उच्चारण में जिह्वाग्र की स्थिति	१७७
१८.	स्, ज् के उच्चारण में जिह्वाग्र की स्थिति	१७८
१९.	फ़्, व् के उच्चारण में ओष्ठ की स्थिति	१७८
२०.	ङ् के उच्चारण में कोमलतालु, जिह्वापश्च	१८०
२१.	न् के उच्चारण में कोमलतालु, जिह्वानोक	१८१
२२.	म् के उच्चारण में कोमलतालु, ओष्ठ	१८२
२३.	ल् के उच्चारण में कोमलतालु, जिह्वानोक	१८३
२४.	र् के उच्चारण में कोमलतालु, जिह्वाग्र	१८४
२५.	क्त् के उच्चारण में जिह्वापश्च, जिह्वा	१८६
२६.	स् के उच्चारण में जिह्वा, ओष्ठ	१८७
२७.	शृंग और गर्त (आक्षरिक, अनाक्षरिक)	१८९
२८.	अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि (I.P.A.)	२२५
२९.	ध्वन्यात्मक नागरीलिपि (स्वर)	२२७
३०.	ध्वन्यात्मक नागरीलिपि (व्यंजन)	२२७

*